CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रंथ

एकमुखी एवम्

पञ्चमुखि हनुमत्कवचम्

भाषा-टीका सहितम्

टीकाकार—श्रीमन्नालाल अभिमन्यु, एम० ए०

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

प्रकाशक—
ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी—

[मूल्य ०.८०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

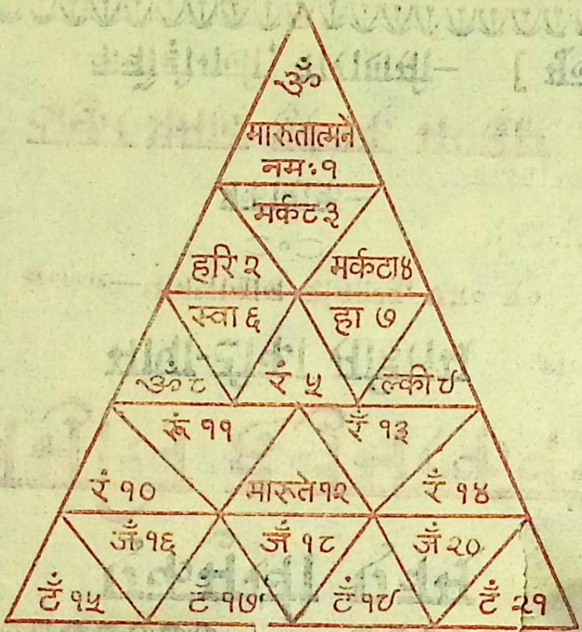

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

* अथ *

पंचमुख्येकमुखिहनुमत्कवचम्

भाषाटीकासहितम्

टीकाकार
श्रीमन्नालाल अभिमन्यु, एम० ए०

—*—

प्रकाशक—
ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार,
कचौड़ीगली, वाराणसी।		मूल्य)८०

पं० ओम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९६
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

अथ पञ्चमुखिहनुमत्कवचप्रारम्भः

अस्य श्रीपंचमुखिहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीहनुमान् देवता। रां बीजम्। मं शक्तिः। चन्द्र इति कीलकम्। ॐरौं कवचाय हुम्। ॐह्रौं अस्त्राय फट्॥ ईश्वर उवाच॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वाङ्गसुन्दरम्॥ यत्कृतं देवदेवेशि ध्यानं हनुमतः

भगवान् शंकर ने पार्वती से कहा—कि इस पंचमुखी हनुमत्कवच स्तोत्रमंत्र के ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द, हनुमान् देवता, रां बीज, मं शक्ति और चन्द्रमा कीलक, रौं कवच तथा ह्रौं अस्त्र है।

अब ध्यान कहता हूँ—हे देवेशि! जो कि हनुमान् जी का परम प्रिय तथा मनुष्य मात्र की अभीष्ट सिद्धि के लिये हितकर है, पाँचमुख, भीमकाय, कपि समूहके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रियम् ॥१॥ पंचवक्त्रं महाभीमं कपियूथसमन्वितम् ॥ बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥२॥ पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं भृकुटीकुटिलेक्षणम् ॥ ३ ॥ अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् ॥ अत्युग्रतेजो वपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥४॥ पश्चिमे गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् । सर्वनागप्रशमनं सर्वभूतादि-कृन्तनम् ॥ ५ ॥ उत्तरे शौकरं वक्त्रं कृष्णदीप्तनभोमयम् । पाताले सिद्धवेतालं ज्वररोगादिकृन्तनम् ॥६॥ ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् । येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाया महाहवे ॥ ७ ॥ दुर्गतो शरणं

साथ, दशभुजाओं से युक्त और कामार्थ को देने वाले हैं। पूर्व में कपि सरीखे मुख तथा अमित तेज, विकराल वदन, टेढ़ी भृकुटि, दक्षिण की ओर नृसिंह स्वरूप, अति उग्रतेज, महत् शरीर और भयनाशक हैं। पश्चिम में गरुडस्वरूप, वक्रतुण्ड, महाबली और नागादिकों का शमन करने वाले हैं। उत्तर दिशा में वाराह स्वरूप, पातालादि में क्रूर जन्तुओं को दमन करने वाले हैं। ऊर्ध्व में अश्वस्वरूप, दानव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्य सर्वशत्रुहरं परम् । ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम्
प. ह. ॥ ८ ॥ खड्गं त्रिशूलं खट्वांगं पाशमंकुशपर्वतम् ॥ मुष्टौ तु मोदकौ क०
४ वृत्तं धारयन्तं कमंडलुम् ॥ ९ ॥ भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दमनं मुनि-
पंगव ॥ एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भयापहम् ॥ १० ॥
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगंधानुलेपनम् । सर्वैश्वर्यमयं देवं हनुमद्वि-
श्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ पंचास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं वक्त्रं
सशंखविभृतं कपिराजवीर्यम् ॥ पीताम्बरादिमुकुटैरपि शोभितांगं
पिङ्गाक्षमञ्जनिसुतं ह्यनिशं स्मरामि ॥ १२ ॥ मर्कटस्य महोत्साहं
सर्वशोकविनाशनम् । शत्रुसंहारकं चैतत्कवचं ह्यापदं हरेत् ॥ १३ ॥
ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय

समूह का हनन करने वाले, पञ्चमुख रुद्रावतार—खड्ग, त्रिशूल, खट्वाङ्ग, पाशादि दश ४
प्रकारके आयुधोंसे युक्त, दिव्यमाला तथा वस्त्राभूषण धारण किये हुए श्रीहनुमानजी
का इस प्रकार ध्यानपूर्वक कवच सहित पाठ करने से समस्त आपदायें नष्ट हो जाती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥१५॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय उत्तरमुखाय आदिवाराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥१६॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकल-जनवश्यकराय स्वाहा ॥ १७ ॥ इति मूलमंत्रः । ॐ अस्य श्रीपञ्चमुखिहनुमत्कवचस्तोत्रमंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिरनुष्टुपछन्दः। श्रीरामचन्द्रो देवता ॥ सीता बीजम् ॥ हनुमानिति शक्तिः, हनु-मत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ पुनर्हनुमानिति बीजम् ॥ ॐ वायुपुत्राय इति शक्तिः । अंजनीसुतायेति कीलकम् ॥ श्रीरामचन्द्रवरप्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ हं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ वं वायुपुत्राय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अं अंजनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ रां रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः । ॐ रुं रुद्रमूर्तये कनिष्ठि-

---

ॐ 'हरिमर्कटमर्कटाय' से लेकर-स्वाहान्त तक मूल मन्त्र के जप के पहिले ॐ 'अस्य श्रीपंचमुखि' से लेकर 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर विनियोगका जल छोड़े और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काभ्यां नमः ॥ ॐ सं सीताशोकनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां
नमः ॥ ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः ॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा।
ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्। अग्निगर्भाय शिरसे स्वाहा ॥ ॐ
रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ पंचमुखिहनुमते अस्त्राय फट् ॥
अथ ध्यानम्—श्रीरामदूताय आंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीता-
शोकनिवारणाय महाबलप्रचण्डाय लंकापुरीदहनाय फाल्गुनसखाय
कोलाहलसकलब्रह्माण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनिरन्तरलंघिताय पिङ्गल-
नयनायामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेवाधिष्ठितनिराक्रमाय संजीवन्या
अंगद-लक्ष्मण-महाकपि-सैन्यप्राणदात्रे दशग्रीवविध्वंसनाय रामेष्टाय
सीतया सह रामचन्द्रवरप्रसादाय षट्प्रयोगागमपंचमुखिहनुमन्मंत्रजपे
विनियोगः ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय

'ॐ हनुमते' से 'अस्त्राय फट्' तक के वाक्यों से अङ्गन्यास करके बाद में एकाग्रचित्त हो "श्रीरामदूताय" से "विनियोग" तक पढ़ कर ध्यान के विनियोग का जल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वं वं वं वं वं फट् स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय ठं ठं ठं ठं ठं स्तंभनाय स्वाहा ॥ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय डं डं डं डं डं आकर्षणाय सकलसम्पत्कराय पंचमुखहनुमते स्वाहा । ॐ उच्चाटने ढं ढं ढं ढं ढं कूर्ममूर्तये पंचमुखहनमते परयन्त्रपरतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं स्वाहा ॥ इति दिग्बन्धः ॥

ॐ पूर्वकपिमुखे पंचमुखहनुमते ठं ठं ठं ठं ठं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ॥ ॐ दक्षिणमुखे पंचमुखहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय हां हां हां हां हां सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ॥ ॐ पश्चिममुखे गरुडासनाय पंचमुखवीरहनुमते मं मं मं मं मं सकलविषहराय

छोड़े। 'ॐ हरिमर्कटमर्कटाय' से लेकर 'सं हं क्षं स्वाहान्त' तक पढ़कर दिग्बन्धन करके फिर "पूर्वकपिमुखे" से आरम्भ कर "जं जं स्वाहा" तक नित्य एकावृत्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वाहा ॥ ॐ उत्तरमुखे आदिवराहाय लं लं लं लं लं नृसिंहाय नील-
कण्ठाय पंचमुखहनुमते स्वाहा ॥ अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय
रामेष्टफाल्गुनसखाय सीताशोकनिवारणाय लक्ष्मणप्राणरक्षकाय कपि-
सैन्यप्रकाशाय सुग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवरप्रसादकाय महा-
वीर्याय प्रथमब्रह्माण्डनायकाय पंचमुखहनुमते भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्म-
राक्षस-शाकिनी-डाकिनी-अंतरिक्ष-ग्रह-परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र-
सर्वग्रहोच्चाटनाय सकलशत्रुसंहारणाय पंचमुखहनुमद्वरप्रसादकसर्वर-
क्षकाय जं जं जं जं जं स्वाहा ॥] इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं
पठेन्नरः । एकवारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम् [१८] ॥ द्विवारं तु
पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ॥ त्रिवारं पठते नित्यं सर्वसम्पत्करं परम्
॥ १६ ॥ चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम् ॥ पंचवारं पठेन्नित्यं

से लेकर ग्यारह आवृत्ति तक कवचका पाठ करने से क्रमशः प्रथमावृत्ति से शत्रुओं का नाश, दूसरी आवृत्तिसे सर्वशत्रुओं का नाश, तीसरी आवृत्ति से सर्वसम्पत् प्राप्त हो,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वरोगनिवारणम् ॥ २० ॥ षड्वारं तु पठेन्नित्यं सर्वदेववशीकरम् ॥ सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥ २१ ॥ अष्टवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ नववारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥२२॥ दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् ॥ एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिं लभेन्नरः ॥ कवचस्मृतिमात्रेण महालक्ष्मीफलप्रदम् ॥ २३ ॥ इति ॥

—: * :—

॥ अथ एकमुखिहनुमत्कवचं प्रारभ्यते ॥

श्रीहनुमते नमः ॥ एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम् । पप्रच्छ गिरिजा कान्तं कर्परधवलं शिवम् ॥ १॥ पार्वत्युवाच ॥ भग-

चौथे से सबको वश में लावे, पाँचवें से सर्वरोगनाश, छठें से सब देवताओं को वश में करे, सातवें से अभीष्ट सिद्धि हो, आठवें से भाग्योदय हो, नवें से सर्वैश्वर्य प्राप्त हो, दसवेंसे ज्ञान, ग्यारहवें आवृत्ति से सिद्धि प्राप्त होती है।

एक समय सुखासीन भस्माङ्गधारी कर्परके समान सुशोभित तथा संसार के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

वन्देवदेवेश लोकनाथ जगद्गुरो । शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा
ए. ह. भवेद्ध्रुवम् ॥ २॥ संग्रामे संकटे घोरे भूतप्रेतादिके भये ॥ दुःखदावा-
ग्निसंतप्तचेतसां दुःखभागिनाम् ॥ ३ ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि
१० प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ॥४॥ विभीषणाय रामेण प्रेम्णा दत्तं
च यत्पुरा ॥ कवचं कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः । गुह्यं ते संप्रव-
क्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि ॥ ५ ॥ ॐ अस्य श्रीहनुमत्कवचस्तोत्र-
मंत्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीमहावीरो हनमान्
देवता । मारुतात्मज इति बीजम् ॥ ॐ अंजनिसूनुरिति शक्तिः ॥

कल्याण की इच्छा रखनेवाले भगवान् शङ्कर से पार्वती ने पूछा—हे देवेश ! जगत् के स्वामी, संग्राम में तथा भूत प्रेतादि से घोर सङ्कट उत्पन्न होने पर शोकाकुलित जनों की रक्षा किस प्रकार होगी इसका समुचित उपाय कहिये । तब महादेव जी ने कहा—हे देवि ! संसार के कल्याणार्थ जो कि प्रेम पूर्वक विभीषण को श्रीरामचन्द्र ने पूर्व में दिया था वह गुप्त हनुमत्कवच तुम्हारे समक्ष कहता हूँ उसे सुनो । इस हनुमत्कवच स्तोत्र मंत्र के श्रीरामचन्द्र ऋषि हैं । अनुष्टुप्छन्द, श्री महावीर हनु-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ हैं ह्रीं ह्रौं इति कवचम् ॥ ॐस्वाहा इति कीलकम् ॥ लक्ष्मणप्राणदाता इति बीजम् ॥ मम सकलकार्यसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः । ॐह्रांअंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐह्रीं तर्जनीभ्यांनमः ॥ ॐह्रींमध्यमाभ्यांनमः ॥ ॐ हैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अंजनीसूनवे हृदयाय नमः ॥ ॐरुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा ॥ ॐवायुसुतात्मने शिखायै वषट् ॥ ॐवज्रदेहाय कवचाय हुँ ॥ ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट् । रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि । तन्नो

मान् देवता, मारुतात्मज बीज, ॐ अञ्जनीसूनु शक्ति, ॐ हैं ह्रीं ह्रौं कवच, ॐ स्वाहा इति कीलक है । इस प्रकार सब कार्य साधन के लिये विनियोग करे ।

इसके बाद अंगन्यास कहता हूँ—"अङ्गुष्ठाभ्यां नम" से लेकर 'अस्त्राय फट्' तक पढ़कर अंगन्यास करके "रामदूताय" से "हूँ फट्" तक पढ़कर दिग्बन्धन करे । इसके बाद "ॐ ध्यायेद्बालदिवाकरे"इत्यादि अग्रिम श्लोकों का ध्यान पूर्वक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

हनुमान् प्रचोदयात् ॥ ॐ हूं फट् इति दिग्बन्धः ॥ ॐ ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं देवेन्द्रप्रमुखप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा। सुग्रीवादिसमस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥ १ ॥ उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं मौञ्जीयज्ञोपवीताऽरुणरुचिरशिखाशोभितं कुण्डलाङ्गम्। भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं वेदनादप्रमोदं ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवङ्गकुलपतिं गोष्पदीं भूतवार्द्धिम् ॥२॥ वज्रांगं पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल-

पाठ करते हुए श्री हनुमानजी के स्वरूप का ध्यान करे कि प्रातःकाल के सूर्य के समान शोभायमान और देवताओं के शत्रुओं के अहंकार को चूर्ण करने वाले, जिनके यश की प्रशंसा इन्द्रादि देवताओं द्वारा की गयी है। ऐसे पराक्रमी हनुमान जी जो सुग्रीवादि वानरों में सुव्यक्त, तत्त्वप्रिय, जिनके लाल नेत्र, पवनसुत कहलाने वाले, पीताम्बरधारी, सूर्य के समान, सुन्दर वीरासन लगाये एवं मूँज की जनेऊ तथा कुंडल धारण किये हुए, भक्त जनों को अभीष्टफल देनेवाले तथा वेदध्वनि के साथ मुनियों द्वारा की गयी स्तुति से प्रफुल्लित होने वाले, वज्र के समान शरीरधारी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मण्डितम् । नियुद्धकर्मकुशलं पारावारपराक्रमम् ॥ ३ ॥ वामहस्ते महावृक्षं दशास्यकरखण्डनम् । उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत् ॥४॥ स्फटिकाभं स्वर्णकान्ति द्विभुजं च कृताञ्जलिम् । कुण्डलद्वयसंशोभिमुखांभोजं हरिं भजेत् ॥ ५ ॥ उद्यदादित्यसंकाशमुदारभुजविक्रमम् । कंदर्पकोटिलावण्यं सर्वविद्याविशारदम् ॥ ६ ॥ श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् । अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥ ७ ॥ अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित । प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥ ८ ॥ यो वारां निधिम-

---

भूरे रंग के बालवाले, अतुल पराक्रम वाले, बायें हाथ में महावृक्ष धारण किये हुए मानो वैरी समूह को नाश करने के लिये उद्यत हों, इस प्रकार स्मरण करें । सुवर्ण के समान दीप्तिमान कुण्डलों से सुशोभित, हाथ जोड़े, कमलवत् मुख से हरि का भजन करते हुए, कामदेव के समान शोभायमान, सर्वविद्या-विशारद भगवान् रामचन्द्र के हृदय के आनन्द देने वाले, अपराजित, आप को सतत प्रणाम है । आप मेरा सर्वदा कल्याण करें क्योंकि आपने जो समुद्र अगाध था उसको क्षण में ही लाँघ कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लयपलग्नमिवोल्लंघयन्नागान्वितो वैदेहीघनशोकतापहरणो वैकुंठ-
तत्त्वप्रियः। अक्षाद्यूर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे सोऽयं वानर-
पुंगवोऽवतु सदा युष्मान् समीरात्मजः ॥९॥ वज्रांगं पिंगकेशं कन-
कमयलसत्कुंडलाक्रान्तगण्डं नानाविद्याधिनाथं करतलविधृतं पूर्णकुंभं
दृढं च॥ भक्ताभीष्टाधिकारं विदधति च सदा सर्वदा सुप्रसन्नं त्रैलोक्य-
त्राणकारं सकलभुवनगं रामदूतं नमामि ॥ १० ॥ उद्यल्लांगूलकेशं
प्रलय-जलधर-भीम-मूर्तिं कपीन्द्रं वन्दे रामांघ्रि-पद्म-भ्रमर-परिवृतं
तत्त्वसारं प्रसन्नम्॥ वज्रांगं वज्ररूपं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डं
दम्भोलिस्तंभसारप्रहरणविकटं भूतरक्षोधिनाथम् ॥ ११ ॥ वामे करे
वैरिभयं वहन्तं शैलं च दक्षे निजकंठलग्नम् ॥ दधानमासाद्य सुवर्ण-

---

वैदेही के शोक का निवारण कर दिया और युद्ध में असुरों के अहंकार को नष्ट कर दिया। ऐसे वीरपुंगव, सर्वदा प्रसन्न रहने वाले, श्रीरामचन्द्र के दूत हनुमान जी का स्मरण करता हूँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्णं भजे ज्वलत्कुण्डलरामदूतम् ॥ १२ ॥ पद्मरागमणिकुंडलत्विषा
पाटलीकृतकपोलमण्डलम् ॥ दिव्यदेवकदलीवनान्तरे भावयामि पवमा-
ननंदनम् ॥ १३ ॥ ईश्वर उवाच ॥ इति वदति विशेषाद्राघवो राक्ष-
सेन्द्रं प्रमुदितवरचित्तो रावणस्यानुजो हि ॥ रघुवरदूतं पूजयामास
भूयः स्तुतिभिरतिकृतार्थं स्वं परं मन्यमानः ॥ १४ ॥ वन्दे विद्युद्वलय-
सुभगं स्वर्णयज्ञोपवीतं कर्णद्वन्द्वे कनकरुचिरे कुण्डलं धारयन्तम् ॥
उच्चैर्हृष्यद्द्युमणिकिरणैः श्रोणिसंभाविताङ्गं सत्कौपीनं कपिवरवृतं
कामरूपं कपीन्द्रम् ॥१५॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धि-
मतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं सततं स्मरामि
॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते हृदयाय नमः ॥ ॐ आंजनेयाय शिरसे

फिर महादेव जी ने कहा कि इस प्रकार श्री रामचन्द्र जी द्वारा इनकी की गई प्रशंसा से विभीषण बहुत प्रसन्न हुए। स्वयं उनकी (हनुमान् जी की) भूरि-भूरि प्रशंसा और स्तवन करके अपनेको अत्यन्त कृतकृत्य समझा। इसके बाद फिर 'ॐ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वाहा ॥ ॐ रुद्रमूर्तये शिखायै वषट् । ॐ रामदूताय कवचाय
हुम् ॥ ॐ हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ अग्निगर्भाय अस्त्राय फट् ॥
ॐ नमो भगवते अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ वायुसूनवे तर्जनीभ्यां नमः ॥
ॐ रुद्रमूर्तये मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ वायुसूनवे अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ
हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ अग्निगर्भाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥
अथ मंत्र उच्यते ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः ॥ ॐ ह्रीं ह्रौं
ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-
डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारी-महामारी-यक्ष-राक्षस-भैरव-वेताल-
ग्रह-राक्षसादिकं क्षणेन हन-हन भंजय-भंजय मारय-मारय शिक्षय-
शिक्षय महामाहेश्वररुद्रावतार हुँ फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते हनु-
मदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुखस्तम्भनं कुरु कुरु ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट्
स्वाहा । ॐ नमो भगवते अंजनीगर्भसंभूताय रामलक्ष्मणानन्दकाय

नमो भगवते', से हृदय "ॐ आंजनेयाय"—तक पढ़ शिखा आदि में अंगन्यास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपिसैन्यप्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाधकाय रणोच्चाटनाय
१७ कुमारब्रह्मचारिणे गम्भीरशब्दोदयाय ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सर्वदुष्टनिवार- ९०
ए. ह. णाय स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूत-भविष्यद्वर्तमानान्
दूरस्थान् समीपस्थान् सर्वकालदुष्टदुर्बुद्धीन् उच्चाटयोच्चाटय परबलानि
क्षोभय-क्षोभय मम सर्वकार्यं साधय-साधय हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ फट्
देहि ॐ शिवं सिद्धं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ॐ स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमते पर-
कृतयंत्र-मंत्र-पराऽहंकार-भूतप्रेत-पिशाच-परदृष्टि-सर्वविघ्न-दुर्जन-चेटक-
विद्यासर्वग्रहान् निवारय-निवारय वध-वध पच-पच दल-दल किल-किल
सर्वकुयंत्राणि दुष्टवाचं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमते पाहि-पाहि एहि-
२ एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनी-डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषयाना- १७
कर्षय मर्दय-मर्दय भेदय मृत्युमुत्पाटयोत्पाटय शोषय-शोषय ज्वल-

करके अग्रिम मंत्र जो कि भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, पूतना, महामारी, आदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल भूतमंडलं प्रेतमण्डलं पिशाचमण्डलं निरासय-निरासय भूतज्वर-प्रेतज्वर-चातुर्थिकज्वर-विषमज्वर-माहेश्वरज्वरान् छिन्धि-छिन्धि भिन्धि-भिन्धि अक्षिशूल-वक्षःशूल-शिरोभ्यंतरशूल-गुल्मशूल-पित्तशूल-ब्रह्मराक्षसकुल-परकुलनागकुलविषं नाशय-नाशय निर्विषं कुरुकुरु फट् स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहान् निवारय स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानरमुखाय हन-हन पापदृष्टिं षंढदृष्टिं हन-हन हनुमदाज्ञया स्फुर-स्फुर स्वाहा ॥ श्रीरामचन्द्र उवाच ॥ हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। प्रतीच्यां पातु

भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों काल के किये हुए दोषों को शमन करने वाले और ग्रह कृत कुदृष्टि का फल हनुमानजी की आज्ञा से सभी नष्ट होने वाले उनका एक स्वर से पाठ करें।

फिर मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीने कहा—कि हनुमान जी पूर्व दिशा की, पवनात्मज दक्षिण दिशा की, रक्षोघ्न पश्चिम की, सागर पार-गामी उत्तर की रक्षा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षोघ्नः उत्तरस्यामब्धिपारगः ॥ १ ॥ ऊर्ध्वमूर्ध्वगः पातु केसरी-
प्रियनन्दनः । अधश्च विष्णुभक्तस्तु पातु मध्यं च पावनिः ॥ २ ॥
अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः ॥ लंकाविदाहकः पातु
सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥३॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः ।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥ ४ ॥ नेत्रे छायापहारी
च पातु नः प्लवगेश्वरः । कपोलौ कर्णमूले तु पातु श्रीरामकिङ्करः
॥ ५ ॥ नासाग्रमञ्जनीसूनुर्वक्त्रं पातु हरीश्वरः । वाचं रुद्रप्रियः पातु

करें और केशरीनन्दन ऊर्ध्व की, विष्णुभक्त नीचे की, पावनि मध्य की और सीता-शोक-विनाशन आग्नेयादि अवान्तर कोणों की रक्षा करें। लंका-विदाहक सब आपत्तियों से, सुग्रीव-सचिव मस्तक की, वायु-नन्दन ललाट की, महावीर दोनों भौहों की और मेरे पलकों की छायापहारी, कपोलों की प्लवगेश्वर, दोनों कानों की रामकिंकर, अञ्जनीसूनु नासाग्र की, हरीश्वर मुख की, रुद्रप्रिय वाणी की,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए. ह. क०

२० २०

जिह्वां पिङ्गललोचनः ॥ ६ ॥ पातु दंतान् फाल्गुनेष्टश्चिबुकं दैत्यप्राणहृत्। पातु कंठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः ॥ ७ ॥ भुजौ पातु महातेजा करौ चरणायुधः। नखान् नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः ॥ ८ ॥ वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः। लङ्काविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ॥ ६ ॥ नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः। गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी च शिवप्रियः ॥ १० ॥ ऊरू च जानुनी पातु लङ्का-प्रासाद-भञ्जनः। जङ्घे पातु महाबाहुर्गुल्फौ पातु महाबलः ॥ ११ ॥ अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः। पादान्ते सर्वसत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीस्तथा ॥१२॥

दैत्यप्राणहृत जिह्वा तथा नेत्रों की, फाल्गुन-सखा दाँतों की, दैत्यप्राणहृत ठुड्डी की, कण्ठ की दैत्यारि तथा सुरार्चित दोनों कन्धों की, महातेजा दोनों भुजाओं की, चरणायुध दोनों हाथों की, नखायुध नखकी, कपीश्वर कुक्षि की और मुद्रापहारी वक्षस्थल की, भुजायुध बगल की रक्षा करें। लङ्काविभंजन पीठ की निरन्तर रक्षा करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् । हनुमत्कवचं यस्तु पठेद् विद्वान् विचक्षणः ॥१३॥ स एव पुरुषः श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति । त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं सदा ॥१४॥ सर्वान्रिपून् क्षणे जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात् । मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तवारं पठेद्यदि ॥१५॥ क्षयाऽपस्मार-कुष्ठादि-तापत्रयनिवारणम् । आर्किवारेऽश्वत्थमूले स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥१६॥ अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयी भवेत् ॥१७॥ यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान्

जो इस हनुमत्कवच का पाठ करेगा वह पुरुष श्रेष्ठ होगा और भुक्ति अर्थात् भोग-विलास के साथ-साथ मुक्ति का भागी होगा । त्रिकाल अथवा एक समय लगातार तीन मास तक पाठ करने से सब शत्रु वश में हो जाते हैं और भक्त सुखी होता है । यदि अर्ध रात्रि के समय जल के मध्य में स्थित होकर सात बार पाठ करें तो क्षय रोग, अपस्मार तथा कुष्ठादि सभी रोग दूर हो जाते हैं । शनिवार को पीपल के वृक्ष के नीचे पाठ करने से अचल लक्ष्मी और संग्राम में विजय प्राप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रियमाप्नुयात्। विवाहे दिव्यकाले च द्यूते राजकुले रणे॥१८॥भूतप्रेत-महादुर्गे रणे सागरसंप्लवे । दशवारं पठेद्रात्रौ मिताहारी जितेन्द्रियः ॥ १६ ॥ विजयं लभते लोके मानवेषु नराधिपः । सिंहव्याघ्रभये चोग्रे शरशस्त्रास्त्रपातने ॥२०॥ शृंखलाबन्धने चैव काराग्रहणकारणे । कायस्थं वह्निदाहे गात्ररोगे च दारुणे ॥२१॥ शोके महारणे चैव ब्रह्म-ग्रहविनाशने । सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोत्यसंशयम् ॥२२॥ भूर्जे

होती है । जो हमेशा साथ रखे वह धनी हो । विवाहादि तथा दिव्यशपथ के अवसर पर, जुआ खेलते समय, कचहरी में, लड़ाई में, भूत प्रेत से सङ्कुल भारी दुर्ग में, सङ्ग्राम में और समुद्र में डूब जावे तो परिमित भोजनकर जितेन्द्रिय होकर रात्रि में दस बार पाठ करे तो इस लोक में विजयी और मानवों में शासनाधिकारी होता है । शेर-बाघ द्वारा प्राण-सङ्कट पड़ने पर, भीषण अस्त्र-शस्त्र द्वारा यातना दिये जाने पर, हथकड़ी-बेड़ी पड़ने पर, जेलखाना का दण्ड पाने पर, शरीर के आग से जल जाने पर, भयङ्कर शारीरिक रोग होने पर, महान शोक के समय, भीषण सङ्ग्राम के अवसर पर और ब्रह्म-ग्रह के विनाश के लिए जो इसका पाठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वा वसने रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके। त्रिगन्धेनाऽथवा मस्या लिखित्वा धारयेन्नरः ॥ २३ ॥ पंचसप्तत्रिलोहैर्वा गोपितं कवचं शुभम्। गले बाहुमूले वा कण्ठे शिरसि धारितम् ॥२४॥ सर्वान् कामानवाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम् ॥ २५ ॥ उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः। आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥२६॥ ॐ हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।

करता है तो उसे जय प्राप्त होती है—इसमें सन्देह नहीं। अथवा भोजपत्र या लाल कपड़े या रेशमी वस्त्र या ताड़पत्र पर अष्टगन्ध या स्याही से लिख कर यंत्र में बन्द करके इस कवच को धारण करें अथवा अष्टधातु के साथ कण्ठ में, भुजदण्ड पर अथवा मस्तक पर धारण करें तो उसकी सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं—यह सत्य है ऐसा श्रीरामजी ने कहा है। जिसने लीला ही से समुद्र लाँघकर शोकाग्नि में जलती हुई सीता के संताप को दूर कर लंका को जला दिया ऐसे हनुमान जी को मैं करबद्ध प्रणाम करता हूँ। हनुमान्, अञ्जनीसुनु, वायुपुत्र, महाबली, रामेष्ट, फाल्गुन-सखा, पिंगाक्ष, अमित विक्रम, उदधि-क्रमण, सीता-शोक-विनाशन,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः ॥२७॥ उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः। लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ॥२८॥ द्वादशैतानि नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः। स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥ २९ ॥ तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्। धनधान्यं भवेत् तस्य दुःखं नैव कदाचन ॥३०॥ इति

लक्ष्मण-प्राण-दाता, दशग्रीव के दर्प को चूर करनेवाले महामना वानराग्रण्य के इन द्वादश नामोंका जो स्वापकाल (शयन के समय) में, उठते समय और यात्रा के समय स्मरण करता है उसका सब भय नष्ट होकर उसकी युद्ध में विजय हो जाती है, धन्यधान्य की वृद्धि होती है और कभी भी वह क्लेश नहीं भोगता।

इति ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत नारद-अगस्त्यसंवाद में वर्णित श्रीरामचन्द्र द्वारा कथित पंचमुख्येकमुखिहनुमत्कवच समाप्त हुआ।

पता—ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी।

प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

मुद्रक—ठाकुर प्रसाद प्रेस, क[illegible]ली, वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे यहाँ से नीचे लिखी धार्मिक पुस्तकें मँगावें

दुर्गासप्तसती भाषा टीका	८.००
दुर्गासप्तसती ३२ पेजी मूल	४.००
महाशिवरात्रि व्रतकथा	१.००
नीति शृङ्गार वैराग्य शतक	३.००
धनिष्ठापञ्चक शान्ति	२.००
विन्ध्यवासिनी पुष्पाञ्जली	१.५०
स्वप्नविज्ञान	१.५०
अनन्त व्रतकथा	१.००
पार्वण श्राद्ध पद्धति	१.००
शुक्लयजुर्वेदीयसंध्योपासन	०.८०
अर्जुन गीता	०.८०
ज्ञान माला	०.८०
सोमवार व्रतकथा भा. टी.	१.००
हरितालिका व्रतकथा भाषा टीका	१.००
आरती संग्रह	०.८०
शिवमहिम्न स्तोत्र	०.६०
चालीसा पाठसंग्रह	०.६०
माघ भादों गणेश चौथ	०.५०
जीवित पुत्रिका	०.५०
महामृत्युञ्जय स्तोत्र	०.४०
चित्रगुप्त व्रत कथा	०.५०
पंचदेवता पूजा	०.५०
सन्तोषीमाता व्रतकथा भा.	१.००
दीपदानपद्धति	०.८०
काशीमाहात्म्य भाषा	०.०६
सत्यनारायण व्रतकथा भाषा टीका ७ ध्यायी	१.००
हनुमान चालीसा	०.४०
शिव चालीसा	०.४०
चाणक्यनीति	२.००
सीताराम विवाह कीर्तन	१.००
दुर्गाचालीसा	०.४०
शनि चालीसा	०.२५
हनुमान नवरत्न	७.६०
रामकलेवा	०.६०

पता-ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी-१

ठाकुर प्रसाद प्रेस कचौड़ीगली वाराणसी।

SCANNED(S)

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh